

Atal Bihari Vajpayee Birth Centenary

Shri Atal Bihari Vajpayee was one of India's most respected and beloved leaders, a towering figure in Indian politics whose vision, eloquence and dedication to public service shaped the course of the nation. Born on December 25, 1924, in Gwalior, Madhya Pradesh, into a humble family, he rose to become a statesman of international repute. His father, a school teacher, instilled in him the values of discipline and integrity, qualities that Vajpayee Ji would carry throughout his life. An exemplary student, he pursued his Bachelor's degree in Arts from Victoria College, Gwalior (now known as Laxmibai College), and later earned an M.A. in Political Science from DAV College, Kanpur. His academic pursuits laid the foundation for a lifelong interest in governance, public policy and international relations.

Vajpayee Ji's political journey began during his student days when he participated in the Quit India Movement of 1942, a landmark campaign in India's independence. His passion for public service drew him away from an initial career in journalism. In 1951, he joined the Bharatiya Jana Sangh, the precursor to today's Bharatiya Janata Party (BJP). He quickly rose through the ranks, earning a reputation as a gifted orator and sharp political thinker. His speeches, imbued with clarity, wit and poetic flair, resonated deeply with people across the country.

Over a political career spanning more than four decades, Vajpayee Ji was elected to the Lok Sabha nine times and to the Rajya Sabha twice—a testament to his unwavering commitment to democratic principles. His parliamentary career was distinguished by roles as Prime Minister, Foreign Minister, Chairperson of important Standing Committees, and Leader of the Opposition. Each role saw him contributing to shaping India's domestic and foreign policy.

Vajpayee Ji served as India's Prime Minister three times, including a full term from 1999 to 2004. His leadership during these years was transformative, marked by bold and visionary initiatives.

Another hallmark of Vajpayee Ji's leadership was his focus on infrastructure development. His ambitious Golden Quadrilateral project, aimed at connecting the four major metropolitan cities of Delhi, Mumbai, Chennai, and Kolkata, revolutionized India's road network and boosted economic development. This project symbolized his vision of a modern and interconnected India, ready to meet the demands of the 21st century.

Vajpayee Ji was known for his consensus-building approach, often reaching across party lines to foster unity and cooperation. His tenure as Prime Minister was marked by efforts to strengthen India's

democratic institutions and promote good governance. His inclusive leadership earned respect from allies and political adversaries alike.

A poet at heart, Vajpayee Ji's speeches and writings reflected his profound understanding of human emotions and societal issues. His poetry, marked by lyrical beauty and philosophical depth, added a unique dimension to his political vision, enabling him to address complex issues with compassion and foresight.

As Foreign Minister in the 1970s and later as Prime Minister, Vajpayee Ji played a pivotal role in shaping India's foreign policy. A firm believer in peaceful coexistence, he worked tirelessly to strengthen India's relations with its neighbors and the international community. His historic Lahore Bus Yatra in 1999 showcased his commitment to peace and dialogue.

Despite retiring from active politics in 2009, Vajpayee Ji continued to inspire the nation. His calm demeanor, sharp intellect, and unwavering commitment to India's progress remained a guiding light. In recognition of his extraordinary contributions, he was awarded the Padma Vibhushan in 1992 and later, India's highest civilian honor, the Bharat Ratna, in 2015. He was also named India's 'Best Parliamentarian' in 1994, underscoring his statesmanship and dedication to democratic ideals.

Vajpayee Ji passed away on August 16, 2018, leaving behind a legacy that continues to inspire leaders and citizens alike. He was a visionary who believed in an India that was modern and progressive yet deeply rooted in its cultural heritage. His life and work embody the ideals of democracy, inclusiveness and national pride.

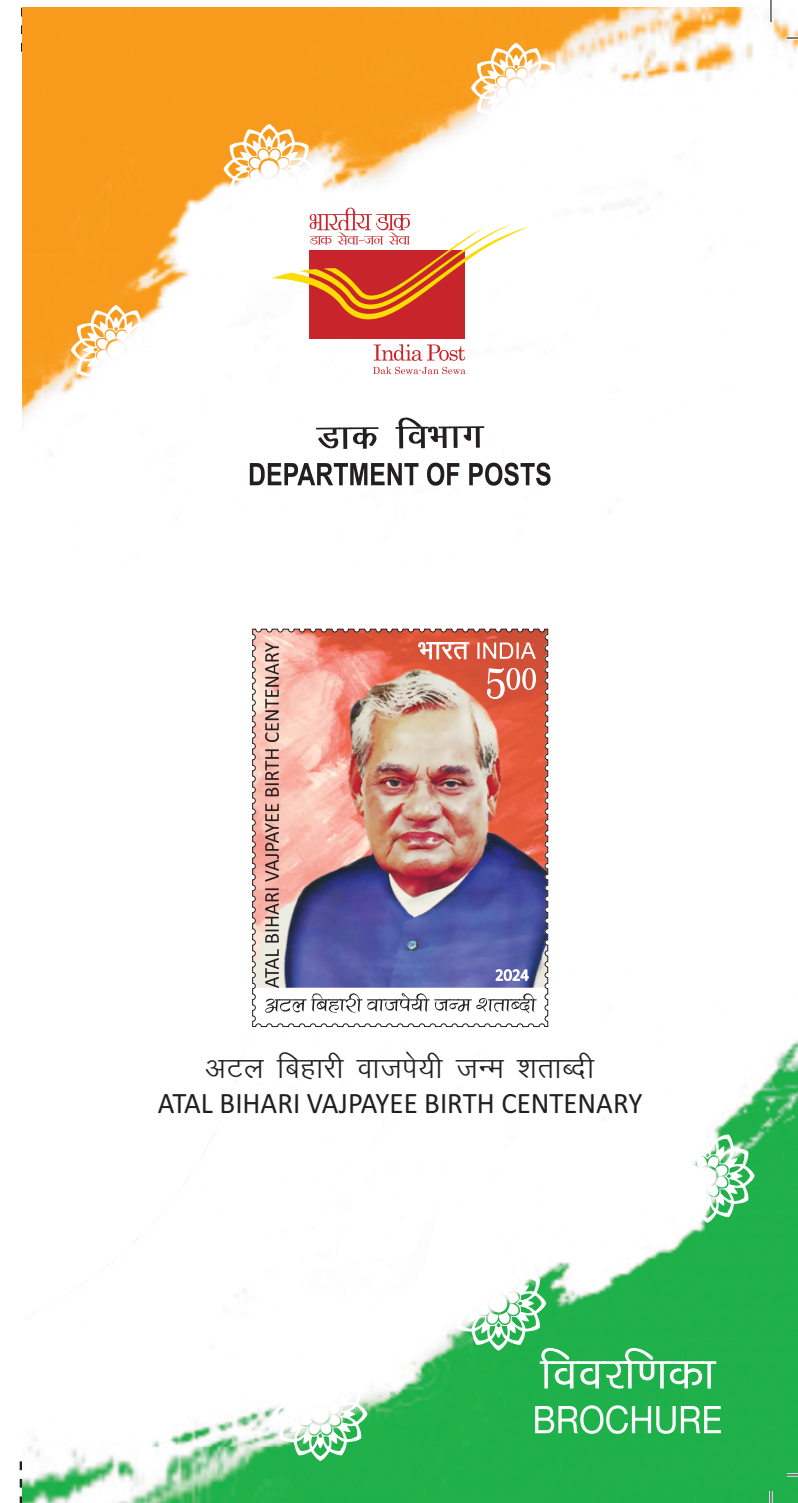
Department of Posts is proud to issue a commemorative postage stamp in honor of Atal Bihari Vajpayee Ji on the occasion of his centenary year. This stamp is a tribute to his unparalleled contributions to India's political and social landscape, his visionary leadership and his enduring legacy as a statesman, poet and nation-builder. India Post hopes this stamp will serve as a lasting reminder of his extraordinary life and inspire future generations to uphold his values. Atal Bihari Vajpayee Ji's legacy as a leader, thinker, and poet will forever remain etched in the heart of the nation.

Credits:

Stamp/ FDC/ Brochure/ : Smt. Nenu Gupta

Cancellation Cachet

Text : Based on information received from Ministry of Culture



अटल बिहारी वाजपेयी जन्म शताब्दी
ATAL BIHARI VAJPAYEE BIRTH CENTENARY

विवरणिका
BROCHURE

अटल बिहारी वाजपेयी जन्म शताब्दी

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, भारत के सर्वाधिक सम्मानित और प्रिय नेताओं में से एक थे। वे भारतीय राजनीति के ऐसे दिग्गज थे, जिनकी दूरदर्शिता, वाक्पटुता और जन-सेवा के प्रति समर्पण ने राष्ट्र को एक नई दिशा दी। 25 दिसंबर, 1924 को ग्वालियर, मध्य प्रदेश के साधारण से परिवार में जन्मे अटल बिहारी वाजपेयी ने आगे चलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में ख्याति अर्जित की। उनके पिताजी एक स्कूल अध्यापक थे। उनके द्वारा सिखाए गए अनुशासन और सत्यनिष्ठा के मूल्य जीवनपर्यंत वाजपेयी जी के साथ रहे। वे एक आदर्श छात्र थे। उन्होंने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (जिसे वर्तमान में लक्ष्मीबाई कॉलेज के नाम से जाना जाता है) से कला में स्नातक तथा कानपुर के डीएवी कॉलेज से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि, शासन, लोक नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उनकी गहन रुचि का मूल आधार थी।

वाजपेयी जी की राजनीतिक यात्रा की शुरुआत उनके छात्र जीवन से ही हो गई थी, जब उन्होंने 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लिया, यह एक ऐसा प्रबल अभियान था, जिसने भारत को आजादी दिलाने की दिशा में भूमिका निभाई। जनसेवा के प्रति उनका इतना गहरा लगाव था कि वे पत्रकारिता के अपने पहले कैरियर को छोड़कर इस क्षेत्र में उतर आए। 1951 में वे तत्कालीन भारतीय जन संघ में शामिल हो गए, जिसे आज भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नाम से जाना जाता है। एक प्रतिभाशाली वक्ता और प्रखर राजनीतिक विचारक के रूप में सुविख्यात वाजपेयी जी का राजनीतिक क्षेत्र में रुतबा बड़ी तेजी से बढ़ा। स्पष्टता, वाक्चातुर्य व काव्यात्मक अंदाज से परिपूर्ण उनके भाषणों ने देशभर में आमजन को अत्यंत प्रभावित किया।

चार दशकों से अधिक के राजनीतिक करियर में वाजपेयी जी नौ बार लोक सभा के लिए और दो बार राज्य सभा के लिए चुने गए। यह, लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। संसद सदस्य के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण पदभार संभाले। प्रत्येक भूमिका में उन्होंने भारत की घरेलू और विदेश नीति को नया आयाम देने में योगदान दिया।

वाजपेयी जी तीन बार भारत के प्रधानमंत्री बने, जिनमें 1999 से 2004 तक का एक पूर्ण कार्यकाल भी शामिल है। इन वर्षों के दौरान उनका नेतृत्व परिवर्तनकारी था, जो उनकी साहसिक एवं दूरदर्शी पहलों में परिलक्षित होता है।

वाजपेयी जी के नेतृत्व की एक अन्य विशेषता यह थी कि उन्होंने इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास पर ध्यान केंद्रित किया। चार प्रमुख महानगरों अर्थात् दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ने वाली उनकी महत्वाकांक्षी स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना ने भारत के सड़क नेटवर्क क्षेत्र में क्रांति ला दी, जिससे आर्थिक विकास को भी बढ़ावा मिला। 21वीं सदी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई यह परियोजना आधुनिक एवं इंटरकनेक्टेड भारत के उनके विजन का प्रतीक है।

वाजपेयी जी, एकता और सहयोग की भावना विकसित करने के उद्देश्य से दूसरी पार्टी के नेताओं से मिलकर सर्वसम्मति बनाने के लिए भी जाने जाते हैं। प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल, भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने और सुशासन को बढ़ावा देने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। समावेशी

नेतृत्व के गुण के कारण राजनीति में उनके मित्र और विरोधी, दोनों ही, समान रूप से उनका सम्मान करते थे।

कवि-हृदय वाजपेयी जी के भाषणों और लेखन में मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक मुद्दों की गहरी समझ प्रतिबिंबित होती है। लयात्मक शब्द-सौंदर्य और दार्शनिक गहराई से परिपूर्ण उनके काव्य ने उनके राजनीतिक दृष्टिकोण को एक अनूठा आयाम दिया, जिसके चलते वे जटिल समस्याओं का भी करुणा भाव और दूरदर्शिता के साथ समाधान कर पाते थे।

1970 के दशक में विदेश मंत्री और तत्पश्चात् प्रधानमंत्री के रूप में वाजपेयी जी ने भारत की विदेश नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में दृढ़ विश्वास रखने वाले वाजपेयी जी ने भारत के पड़ोसियों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ संबंधों को मजबूत करने की दिशा में अथक प्रयास किए। 1999 की उनकी ऐतिहासिक लाहौर बस यात्रा, शांति एवं संवाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

2009 में सक्रिय राजनीति से सन्यास लेने के बावजूद, वाजपेयी जी देश के प्रेरणा स्रोत बने रहे। उनका शांत स्वभाव, प्रखर बुद्धि और भारत की प्रगति के प्रति अटूट प्रतिबद्धता एक ज्योतिर्पुंज के रूप में देश का मार्गदर्शन करती रही। राष्ट्र निर्माण में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें 1992 में पद्म विभूषण और बाद में वर्ष 2015 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया। 1994 में वाजपेयी जी को भारत का सर्वश्रेष्ठ सांसद पुरस्कार भी दिया गया, जो राजनीतिज्ञ के तौर पर उनकी क्षमता व लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

16 अगस्त, 2018 को वाजपेयी जी का निधन हो गया। वे, अपने पीछे एक ऐसी विरासत छोड़ गए हैं, जो आज भी नेताओं और आमजन दोनों के लिए प्रेरणास्रोत है। अटल जी एक ऐसे द्रष्टा थे, जिन्होंने ऐसे भारत की कल्पना की, जो आधुनिक भी हो और जिसे अपनी सांस्कृतिक विरासत पर भी गर्व हो। उनके जीवन और कार्यों में लोकतंत्र, समावेशिता और राष्ट्रीय गौरव के आदर्श झलकते हैं।

डाक विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर सम्मान स्वरूप स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह डाक-टिकट, भारत के राजनीतिक एवं सामाजिक परिदृश्य में उनके अप्रतिम योगदान, उनके दूरदर्शी नेतृत्व तथा राजनीतिज्ञ, कवि व राष्ट्र-निर्माता के रूप में उनकी चिरस्थायी विरासत का प्रतीक स्वरूप है। भारतीय डाक यह आशा करता है कि वाजपेयी जी के असाधारण जीवन को प्रतिबिंबित करता यह डाक-टिकट भावी पीढ़ियों को उनके मूल्यों को अपनाने व बनाए रखने के लिए प्रेरित करेगा। नेता, विचारक और कवि के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी जी की विरासत लोगों के मन में सदैव बसी रहेगी।

आभार :

डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/

विवरणिकाध्विरूपण केशे

पाठ

: श्रीमती नीनू गुप्ता

: संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग : 500 पैसे
Denomination : 500 p

मुद्रितडाक-टिकटें : 202800
Stamps Printed : 202800

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00